कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 2882324

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

नोट भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय Hindi

परीक्षा का दिन Friday

दिनांक 08.04.2022

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	4
2	6	20	5
3	10½	21	
4	2	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	3	31	
14	3	योग	79½
15	3	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	6	80	अस्सी
18	6		

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक 25404

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज का ही उपयोग में लिया गया है।168/2021

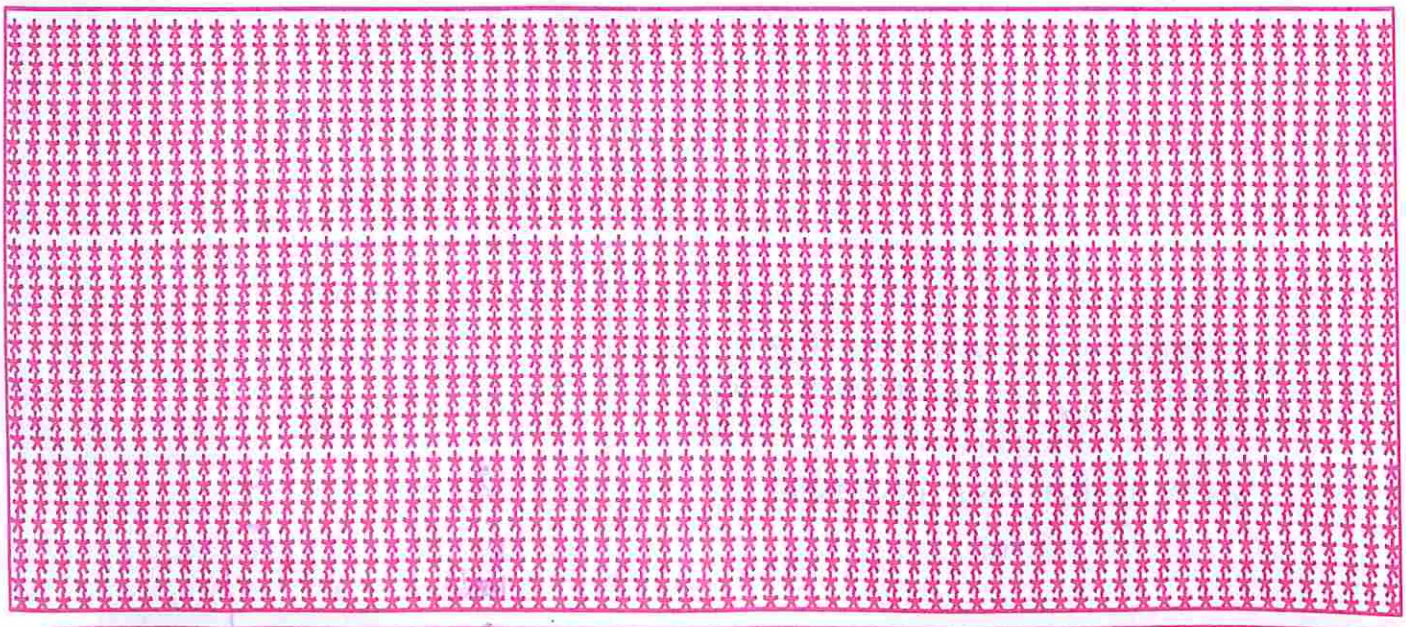

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(i) पुस्तिका की पंक्ति में 12 - 13 से अधिक शब्द नहीं आने चाहिए।

(ii) लेखन में जटिल, उच्चारण में कठिन तथा शॉर्ट फॉर्म (लघु संकेतों) का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए।

(iii) 0 से 9 तक के अंकों को शब्दों में तथा 11 से 999 तक के अंकों को संख्या में लिखा जाना चाहिए।

(iv) इसके अतिरिक्त सूचना पठनीय, संप्रेषणीय व सरल होनी चाहिए जिससे पाठक उसे आसानी से ग्रहण कर ले।

(v) प्रामाणिकता व शुद्धता होनी चाहिए।

2

BSER-168/2021

---

5. पत्रकारिता का अर्थ होता है एक पत्रकार द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान करना। इसमें एक पत्रकार टी.वी., रेडियो अथवा इन्टरनेट के माध्यम से देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था, धार्मिक कार्यक्रम, आध्यात्मिक कार्यक्रम आदि के बारे में सामान्य जन को सूचित करता है।

* पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत एक पत्रकार घटना का स्थान व समय, उसकी तारीख व दिन को लिखता है। तत्पश्चात घटना की संक्षिप्त में हेडलाईन में जानकारी देता है। इसके नीचे घटना का पूर्ण विवरण दिया जाता है।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पत्रकारीय लेखन के लिए आवश्यक है कि लेखन को त्रुटिरहित बनाना, पत्रकार का संबंधित भाषा में निपुण होना व योग्यता होना अनिवार्य पहलू है।

6. अध्यापक और छात्र के बीच गृहकार्य को लेकर पाँच वाक्य निम्नलिखित है-

अध्यापक - मनीषा, क्या तुमने गृहकार्य पूर्ण किया?

मनीषा - क्षमा करें सर! मैं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य के कारण ऐसा नहीं कर सकी।

अध्यापक - वह महत्त्वपूर्ण कार्य कौनसा है?

मनीषा - सर! मेरे माताजी के कल अत्यधिक सिरदर्द हो रहा था, इसलिए घर का काम मुझे ही करना पड़ा था।

अध्यापक - कोई बात नहीं, बेटा! बैठ जाओ। तुमने अपनी माता की सहायता करके काबिले तारीफ काम किया है। आगे से ध्यान रखना।

7. 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि कुँवर नारायण ने संदेश दिया है कि हमें अपनी बात को कहने के लिए भाषायी प्रभाव नहीं दिखाना चाहिए और सहूलियत से भाषा को बरतना चाहिए।

हम अपना पाण्डित्य प्रकट करने के चक्कर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

में बात के मुख्यार्थ की बलि चढ़ा देते हैं जिससे कविता असार हो जाती है। किसी भाषा में एक भाव के लिए एक निश्चित शब्द होता है। हमें अपने भावानुकूल व कविता को संवेदनशील बनाने के लिए उपयुक्त शब्दों का चयन करना चाहिए।

2

8. जब बच्चे शरद ऋतु के आने पर पतंग उड़ाते हैं, वो अत्यन्त उत्साहित, उल्लास और उमंग से भर जाते हैं। वे आकाश में जब ऊँची ऊँचाईयों पर पतंग को लहराते हैं, तो वे भी पतंग की तरह लहराने लग जाते हैं। तब ऐसा लगता है मानो वे भी पतंगों के साथ उड़ रहे हैं। पतंग की धड़कती ऊँचाईयाँ उन्हें महज एक धागे के सहारे बाँध लेती हैं और उनका मन भी पतंगों के साथ गोते खाने लग जाता है।

2

9. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के फूल को कालजयी अवधूत इसलिए कहा है क्योंकि शिरीष का फूल आँधी, लू, तपन और भीषण गर्मी में भी वायुमण्डल से रस खींचता हुआ और ~~जीवन~~ जिजीविषा से संपन्न रहकर अटल रहता है।
शिरीष विषम परिस्थितियों में भी एक संन्यासी की भाँति अटल और अडिग बना रहता है।

2

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अवधूत का अर्थ होता है संन्यासी और शिरीष का फूल बिल्कुल संन्यासी की तरह हर स्थिति में समानता का भाव प्रदर्शित करता है और कालजयी बनता है।

10. जैनेन्द्र जी के अनुसार 'पर्चेजिंग पावर' अथवा 'क्रय-शक्ति' मनुष्य की वह शक्ति है जिससे वह बाजार में जो चाहे वह वस्तु खरीद सकता है, भले ही वह उपयोगी हो या नहीं।
उदाहरण के तौर पर एक अमीर मनुष्य के पास अतुलित धन होता है जबकि गरीब के पास इतना नहीं होता है। इस कारण गरीब अपने को हीन भावना से युक्त और गिरा हुआ मानता है। जब मन संतुष्ट नहीं होता है तब वह अपनी पर्चेजिंग पावर के घमण्ड में बाजार को विनाशक शैतानी शक्ति प्रदान करता है और अनावश्यक वस्तुएँ भी खरीदने लगता है।

11. यशोधर बाबू शाम साढ़े पाँच ही ऑफिस का काम निपटाकर निकल जाते थे किन्तु उन्हें उनका पत्नी और बच्चों से पिछले कुछ समय से मतभेद चल रहा था और ऐसा में वे अपने पत्नी और बच्चों के ताने सुनने की बजाय बाजार में सब्जी खरीदना और

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मंदिर जाने में रुचि लेते। वस्तुतः उनकी पत्नी और बच्चे आधुनिकता के प्रभाव में आकर उनके आदर्शों का पालन नहीं करते थे और यशोधर बाबू का यथोचित सम्मान नहीं करते थे, इसलिए ऐसा होता था।

2

12. जब लेखक और उसकी माता ने दत्ताजी राव सरकार को सत्य से अवगत कराया कि उसका दादा दिनभर गाँव में घूमता रहता है और लेखक की पढ़ाई छुड़वाकर उसे खेती के काम लगा रखा है, तब दत्ताजी राव ने उन्हें लेखक की पढ़ाई जारी करवाने के संबंध में आश्वासन दिया। उन्होंने लेखक के पिता को बुलाया, उसे बहुत डाँटा और उसके प्रत्येक तर्क को काटते हुए उसे आदेश दिया कि अगले दिन से लेखक की पढ़ाई सुचारू रूप से जारी रहनी चाहिए। दादा दत्ताजी राव की बात की अवहेलना नहीं कर सकता था, इसलिए उसे लेखक को पढ़ने के लिए भेजना पड़ा।

2

13. "कैमरे में बंद अपाहिज' कविता आजकल के मीडिया कर्मियों की स्वार्थपरता और लोलुपता को दर्शाती है। कारोबारी दबाव के चलते और ~~मानिका~~ स्वार्थी स्वभाव के कारण प्रश्नकर्ता का एकमात्र उद्देश्य था कि उसका कार्यक्रम सफल हो जाए।

BSHE-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

वह चाहता था कि वह समर्थ = शक्तिवान है, इसलिए वह एक दुर्बल को लाएगा और उसकी अपंगता को इतनी करुणा और संवेदना से प्रस्तुत करे कि दर्शक-श्रोता और अपाहिज दोनों ही रो पड़े और उसका सामाजिक उद्देश्य से दिखाए जाने वाला कार्यक्रम सफल और प्रसिद्ध बने ताकि उनके चैनल की ख्याति बढ़े और वे धनवान बन जाएँ।

* विडंबना ये है कि अपाहिज की संवेदना और पीड़ा को प्रकट करने के दौरान प्रश्नकर्ता खुद संवेदनहीन हो जाता है और समय बचाने के लिए जल्द-से-जल्द अपाहिज के दुख: दर्द को बेचना चाहता है।

→ यदि हम अपाहिज के प्रश्नकर्ता होते तो हम उसकी पीड़ा को समझते और उसे बोलने का अवसर देते। हम उससे बेतुके प्रश्न पूछने के बजाय उसे पूर्णतः समय और भावों को स्वच्छंदता और स्वतंत्रता से प्रकट करने का अवसर देते ताकि सामाजिक उद्देश्य की उचित पूर्ति हो सके। हमारी प्राथमिकता धनार्जन नहीं, अपितु अपाहिज की स्वतंत्रता और उसका ध्यान रखना होती।

3

---

14. भगत जी एक व्यक्ति है जो लेखक जैनेन्द्र कुमार के पड़ोस में रहते है। लेखक ने उनके बारे में कहा है कि वे संतुष्ट,

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रसन्नचित्त और शांत स्वभाव के आदमी हैं। वे चूरन बेचते है और जब छः आना कमाई हो जाती है तो बचा चूरन मुफ्त में बाँट देते है। उनपर बाजार का जादू नहीं चलता है। उनका मन लक्ष्य के प्रति चेतन रहता है, यदि उनको जीरा व नमक लेना है तो वे सीधे पंसारी की दुकान पर जाएंगे, और पूरा चौक बजार, उसकी सुन्दरता, आकर्षक वस्तुएँ और चमक-दमक को देखकर वे भौचक्के नहीं होते है। वे तो शांत मन, संतुष्ट एवं खुली आँखों से चेहरे पर मुस्कुराहट लेकर चलते हैं।

→ लेखक कहता है कि इस प्रकार का आचार बाजार में शांति स्थापित करने में सहायक है क्योंकि वे बाजार से आवश्यकता की वस्तु खरीदकर ही उसे सार्थकता प्रदान करते है।

व्यंग्य शक्ति और पैसे की विनाशक शक्ति उनके सामने पानी-पानी हो जाती है।

* यदि सभी भगतजी जैसे बन जाएँ और बाजार के दिखावे और कपट में नहीं पड़े तो बाजार समता का भाव स्थापित कर सकता है। ऐसे में बाजार आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला बन जाता है।

आपसी प्रेम-भाव बढ़ जाता है और द्वेष की भावना दुर्बल हो जाती है। तब बाजार समाज, जाति, धर्म, लिंग, संप्रदाय में समरसता स्थापित करता प्रतीत होता है और उसी क्षण बाजार को सार्थकता मिलती है।

3

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. एक विद्यार्थी के जीवन में गुरू का अनन्य महत्त्व होता है। व कहा भी गया है, " गुरू गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पाय, बलिहारी गुरू आपणो, गोविंद दियो बताय!"
अर्थात् वेदों और शास्त्रों में तो गुरू को माता-पिता और ईश्वर से भी उच्च स्थान मिला है।
→ प्रस्तुत पाठ में आनन्द यादव जब विद्यालय में पढ़ने जाते है, तो अपने मराठी भाषा के गुरू 'न. वा. सौंदलगेकर' की सुर-योजना, कविता का गायन, अभिनय और भाव-संप्रेषण देखकर उनके प्रति समर्पित हो जाते हैं। वे अपने सिक शिक्षक को ही आदर्श मानकर उनके जैसा करने की और कविता दोहराने की कोशिश करता है।
* जब लेखक को कोई समस्या या परेशानी होती है, तब वह शिक्षक के पास तुरन्त जाता है। वह उन्हें अपने द्वारा लिखी गई कविता दिखाता है। तब शिक्षक उसे नए कवियों के बारे में, अलंकार, छंद, लय आदि का ज्ञान और नई पुस्तकें पढ़ने के लिए देते है जिससे लेखक का अधिकाधिक विकास होता है और जीवन समृद्ध बन जाता है।
सार में हम यह कह सकते हैं कि गुरू का महत्त्व एक विद्यार्थी के जीवन की दिशा बदल देता है। अच्छा गुरू मिल जाए तो जीवन को नई दिशा मिल जाती है। प्रलय और निर्माण गुरू की गोद में खेला करते हैं

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. * हरिवंश राय 'बच्चन'

जन्म : सन् 1907 ई० में.
जन्म-स्थान : इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश में।
मृत्यु : सन् 2003 में, मुंबई में।

* महत्त्वपूर्ण कृतियाँ - मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश इनके महत्त्वपूर्ण काव्य संग्रह है। इसके अतिरिक्ति मिलन-यामिनी, आकुल अंतर आदि अनेक रचनाएँ इन्होंने लिखी है।
→ इन्होंने एक आत्मकथा भी लिखी है जिसके चार खण्ड है -
(i) बसेरे से दूर
(ii) नीड़ का निर्माण फिर
(iii) क्या भूलूँ क्या याद करूँ
(iv) दशद्वार से सोपान तक
इनको कई पुरस्कार भी मिले है। इनके पुत्र 'अमिताभ बच्चन' फिल्म इंडस्ट्री में जाने-माने अभिनेता रह चुके है।
* ये हालावादी दर्शन के कवि है। इन्हें हालावाद का प्रवर्तक माना जाता है।
* इन्होंने छायावादी कवियों की तरल लाक्षणिक वक्रता की बजाय सीधे-सरल शब्दों में कविता लिखी है। अपने जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों की सहज भावाभिव्यक्ति इनकी कविता के मुख्य गुण है।
* ये प्रेम के दीवाने कवि रहे है। इन्होंने पूरे विश्व से प्रेमभाव रखने का संदेश दिया है।

3

BSER 16/8/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

17. **संदर्भ** - प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के नवम पाठ 'रूबाईयाँ' से लिया गया है। यह अवतरण कवि शायर फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित 'गुले नग्मा' का एक अवतरण है।

प्रसंग - रूबाई उर्दू - फारसी का एक छंद होता है जो चार पंक्तियों का होता है। प्रस्तुत रूबाईयों मे कवि ने दीपावली की मनोरम शाम का और ~~रक्षाबंधन के पावन त्योहार~~ माता द्वारा बालक की पारंपरिक जिद को पूर्ण करना बताया गया है।

2

व्याख्या - जब दीपावली का त्योहार आता है तो हर कोई अपने घर मे रंग - रोगन व सजावट से घर को आकर्षक बनाता है। इस मौके पर माता - पिता अपने नन्हे से बालक के लिए चीनी मिट्टी के खिलौने लेकर आते हैं और शाम को जब दीपक जलाए जाते हैं तो ऐसा लगता है कि हर तरफ कोई तारा जगमगा रहा हो। दीवाली पर जगमाते ~~[illegible]~~ दीपक लाए जाते हैं।
आगे कवि कहता है कि जब नन्हा बालक अपने छोटे से मिट्टी के घर मे खेल रहा होता है तो उसकी माता अपने चेहरे पर मन्द मुस्कान और चमक लिए एक दीपक उसके घर मे भी जलाती है। इस तरह बच्चा अतीव प्रसन्न हो जाता है और माँ की तरफ

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्यार से देखता है।
अगली रूबाई मे नन्हा बच्चा आँगन मे हाथ- पैर पटकता है और चाँद को पाने की जिद करता है। होने मे तो वह एक बालक मात्र ही है पर वह चाँद को पाने का सपना देख रहा है। ऐसे मे माता उसे एक आईना देती है और उसमे चाँद का प्रतिबिम्ब दिखाती है। तब माता बोलती है कि देख, मैंने तेरे लिए चाँद को आईने मे बुला लिया है। उसे देखकर बच्चा खुशी से झूम उठता है।

4

विशेष- (i) इसे पढ़कर सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आ जाती है।
(ii) हिन्दी - उर्दू मिश्रित शब्दावली का प्रयोग दृष्टव्य है।
(iii) इनमे गेयता और सुरीलापन है। 'रूपवती मुखड़े' व 'नर्म दमक' जैसे वाक्यांशो का सुन्दर प्रयोग है।

6

BSER-168/2021

---

18. संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के ग्यारहवे पाठ 'भक्तिन' से लिया गया है। मूलतः यह पाठ महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'स्मृति की रेखाएँ' से उद्धृत है।

प्रसंग - इसे लेखिका अपने तथा भक्तिन के बीच के गहरे संबंध को प्रकट करती है। लेखिका ने बड़े ही मार्मिक ढंग से भक्तिन के चरित्र को इसमे दर्शाया है।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या - लेखिका कहती है कि उसके और भक्तिन के बीच सेवक - स्वामी संबंध कहना कठिन है। सेवक सदैव अपने स्वामी की आज्ञा का पालना करता है पर ऐसा कोई स्वामी नहीं जो इच्छा होने पर भी सेवक को न हटा सके। महादेवी भक्तिन को चाहकर भी नहीं हटा सकती, जब वे भक्तिन को जाने के लिए कहती है तो भक्तिन अवज्ञा से हँसने लग जाती है।

लेखिका कहती है कि जिस प्रकार हम घर में बारम्बार आने वाले अँधेरे और उजाले को, आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक नहीं कह सकते, क्योंकि वे तो आते जाते रहते है, उसी प्रकार भक्तिन को सेविका कहना सर्वथा अनुचित है। उनका अलग अस्तित्व है और उसी को सार्थकता देने के लिए वे हमें सुख - दुख देते है, उसी प्रकार भक्तिन अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास का परिचय देती है और सदा मेरे आसपास रहती है। इस प्रकार लेखिका ने उसके और भक्तिन के बीच रिश्ते को समझाया है।

विशेष - (i) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
(ii) भाषा तत्सम प्रधान है।
(iii) भावाभिव्यक्ति उत्कृष्ट और मार्मिक चित्रण किया गया है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) लेखिका ने अपनी बात को उदाहरण के साथ समझाया है।

19.

राजस्थान सरकार
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर

पत्रांक - मा.शि.बो./346/2022 08 अप्रैल 2022

विज्ञप्ति

बोर्ड परीक्षा के तिथि परिवर्तन के संबंध में सूचित किया जाता है कि कोरोना के मामले बढ़ने के कारण व बच्चों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए जो बोर्ड परीक्षा 12 अप्रैल से होने वाली थी, वही अब 2 मई से प्रारंभ होगी। विद्यार्थियों को नए प्रवेश पत्र समयानुसार वितरित किए जाएँगे।

सचित
( )

BSER-168/2021

2.

1	(1)	भाषा
1	(2)	लिपि
1	(3)	अभिधा
1	(4)	लक्षणा शब्द शक्ति
1	(5)	'च' वर्ण, अनुप्रास अलंकार
1	(6)	यमक अलंकार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3.

(1) (अ) ~~सूचना~~

2 (ब) ~~वृत्ताकार~~

(2) किसी भी भाषा के शब्दों व अर्थों का जो संकलन होता है, वह शब्दकोश कहलाता है।

(3) इन्टरनेट के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान ही और संप्रेषण ही इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है।

(4) 'भक्तिन' का वास्तविक नाम 'लक्ष्मिन' था, अर्थात् लक्ष्मी था।

(5) यशोधर बाबू अपनी पत्नी के आधुनिक आचरण को 'समहाउ इंप्रापर' और बेतुका कहकर मजाक उड़ाते थे।

(6) 'सिल्वर वैडिंग' से कहानी का आशय है कि इसमें एक पति-पत्नी की 'पच्चीसवी-सालगिरह' मनाई जा रही है। उनकी शादी को पच्चीस वर्ष पूर्ण हो गए।

(7) लेखक ने आराम करने, बाजार में घूमने और सारा दिन रखमा बाई के यहाँ चैन से बिताने के लिए लेखक की पढ़ाई छुड़वाई क्योंकि उसे काम नहीं करना पड़े और लेखक सारा

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		काम करे।
	(8)	लेखक को अकेला रहना इसलिए अच्छा लगा क्योंकि अकेले में वह कविता को ऊँचे सुर और आवाज में गाना, अभिनय करना, चेहरे के हाव-भाव प्रदर्शित करना और नाचना आदि स्वतंत्रता से कर सकता था।
	(9)	रघुवीर सहाय की दो रचनाएँ है, (i) इन सीढ़ियों पर धूप में (ii) आत्महत्या के विरुद्ध
10½	(10)	महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में फर्रुखाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ।
	(11)	जब लेखक की वसंत पाटील के साथ दोस्ती हुई और अध्यापक उसे प्यार से 'आनंदा' कहकर बुलाने लगे, तो उसका ध्यान पढ़ाई में लगने लगा।
	1.	
1	(1)	(अ) सुख और दुःख
1	(2)	(अ) जिसका मन वश में है।
1	(3)	(ब) विधाता की योजना के अनुसार
1	(4)	(स) जिसका मन अपने वश में नहीं है।
1	(5)	(अ) जो समझता है कि वह दूसरो पर उपकार कर रहा है।
1	(6)	(स) मन के विकल्प

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(7)	(अ) आनंद
1	(8)	(स) आँसुओं की
1	(9)	(अ) मुस्कान देखकर
1	(10)	(स) बचपन
1	(11)	(अ) चंदा
(12) 1	(12)	(द) आँसू भरी आँखे

20. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट की आवश्यकता

→ (i) प्रस्तावना
(ii) इन्टरनेट क्या है? की आवश्यकता
(iii) विद्यार्थियों को इंटरनेट से लाभ
(iv) परिणाम और दुष्परिणाम
(v) उपसंहार

*(i) प्रस्तावना - इन्टरनेट आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इसकी मदद से आज लगभग सभी काम हो रहे हैं। जब से इन्टरनेट आया है, सभी कामों मे उत्कृष्टता, तेजी और विकास देखने को मिला है। जहाँ तक शिक्षा को देखे तो आज प्रतियोगिता का माहौल काफी बढ गया है। विद्यार्थियों के लिए जल्द से जल्द शिक्षा पाना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाना और

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अधिक से अधिक सामग्री का संकलन ही सफलता की मुख्य नींव बन चुका है। ऐसे में इन्टरनेट विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

* (ii) विद्यार्थियों के जीवन में इन्टरनेट की आवश्यकता -
यांत्रिकता के विकास व नए साधन एवं तकनीकों के विकास के चलते आज हमें अत्याधुनिक माध्यम बड़ी आसानी से मिल जाते है और हम भी उनका पूर्ण लाभ ले पाते है। आजकल जिस तरह प्रतियोगिता की होड़ मची हुई है, उसे देखकर विद्यार्थियों के लिए इन्टरनेट का महत्त्व बढ़ जाता है। वे इसके माध्यम से नए नोट्स ले सकते है, वीडियो आदि देख सकते है जिसकी मदद से उन्हें जल्दी समझ आता है, व अन्य ढेर-सारी जानकारी इन्टरनेट पर उपलब्ध है जिसकी व सहायता से वे अपनी शिक्षा में बढ़ोतरी कर सकते है।

* (iii) विद्यार्थियों को इन्टरनेट से लाभ -
विद्यार्थियों को इन्टरनेट से जो लाभ हुए है वो इस प्रकार है -
(i) घर बैठे शिक्षा ग्रहण कर सकते है।
(ii) फीस भी कम भरनी पड़ती है।
(iii) इन्टरनेट पर उच्च गुणवत्ता की शिक्षण सामग्री आसानी से उपलब्ध होती है।

BSER-16/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) विद्यार्थियों का समय की कोई बाध्यता नहीं होती है।

(v) घर पर शान्ति का माहौल रहता है जिससे वे अत्यधिक ध्यान लगाकर पढ़ते हैं।

(vi) आने - जाने में समय और किराया नहीं लगता है और बचत होती है।

* परिणाम और दुष्परिणाम -

इन्टरनेट पर विद्यार्थियों के पाठन के निम्न परिणाम होते हैं -

→ विद्यार्थी जल्दी सीखने में सक्षम बन पाता है।

→ अपने करियर का सही निर्णय ले पाता है और इन्टरनेट उसका मार्गदर्शन करता है।

→ विद्यार्थी प्रतियोगिताओं की उत्कृष्ट तैयारी करता है और उनमें सफलता भी प्राप्त करता है।

दुष्परिणाम

→ विद्यार्थी की आँखें मोबाईल फोन में देखने से कमजोर हो जाती है और उनपर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

→ विद्यार्थी इन्टरनेट पर गलत व्यसनों और आदतों में फँस जाता है और जुआ भी खेलने लगता है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

→ अधिक स्क्रीन पर समय बिताने से उसमे सिरदर्द व अन्य स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ देखी जाती हैं।

* उपसंहार – हम मानते है कि विद्यार्थी के जीवन मे इन्टरनेट का जितना महत्व वर्तमान परिप्रेक्ष्य में है उतना ही यह हानिकारक भी है। इसकी उपयोगिता बहुत ज्यादा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तो और भी बढ़ गई है। अतः हमे वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इन्टरनेट से मिलने वाले लाभों को चुनना चाहिए।

"विद्यार्थी है देश का भविष्य,
अतः इन्टरनेट का सही उपयोग
अपनी शिक्षा के लिए करें।"

समाप्त

5

पांच

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

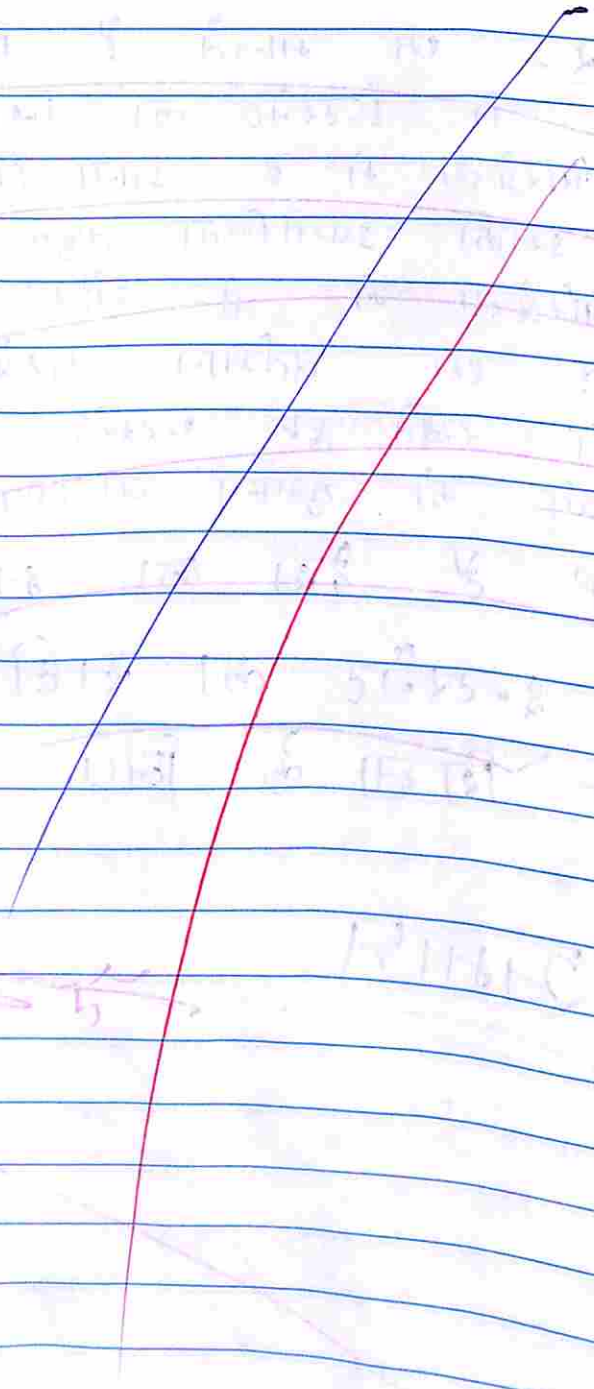

BSER-16/8/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

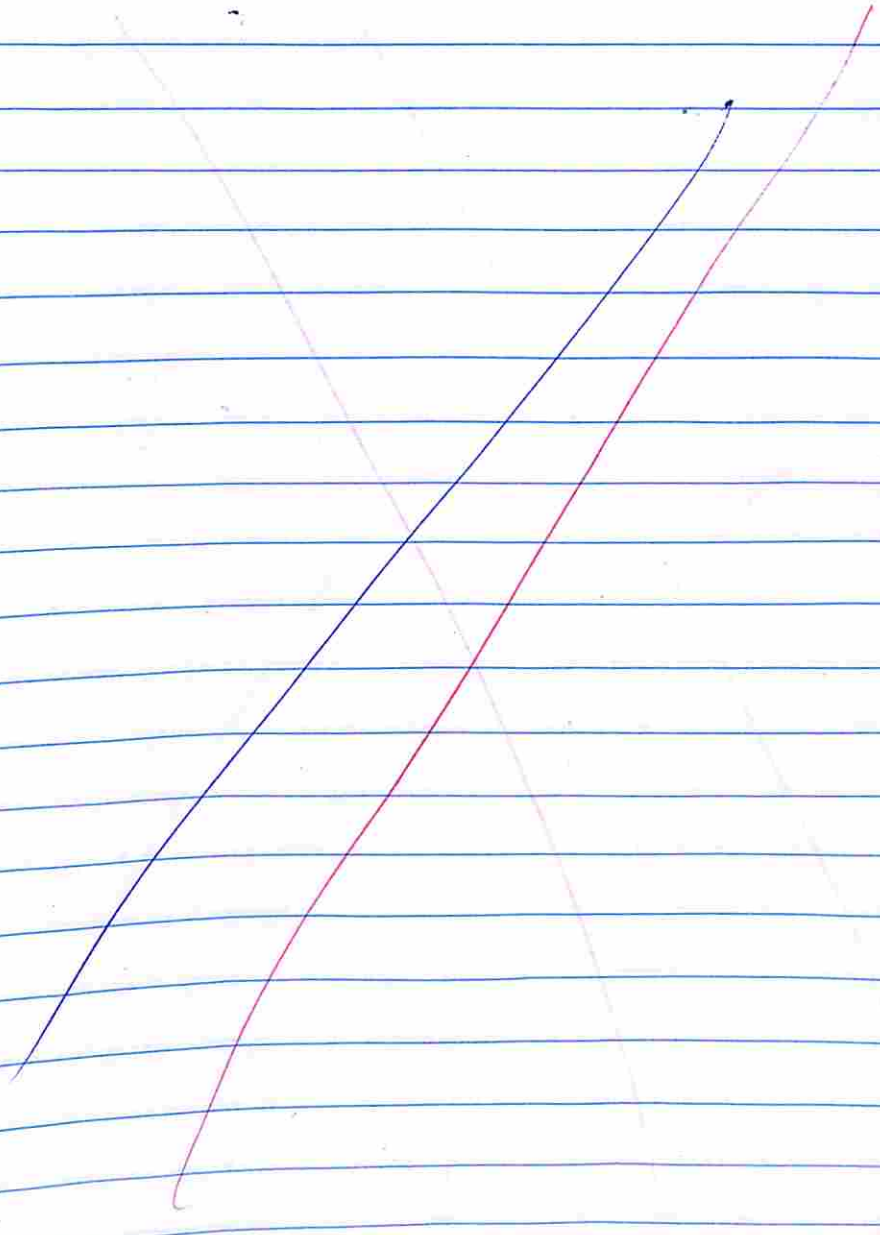

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

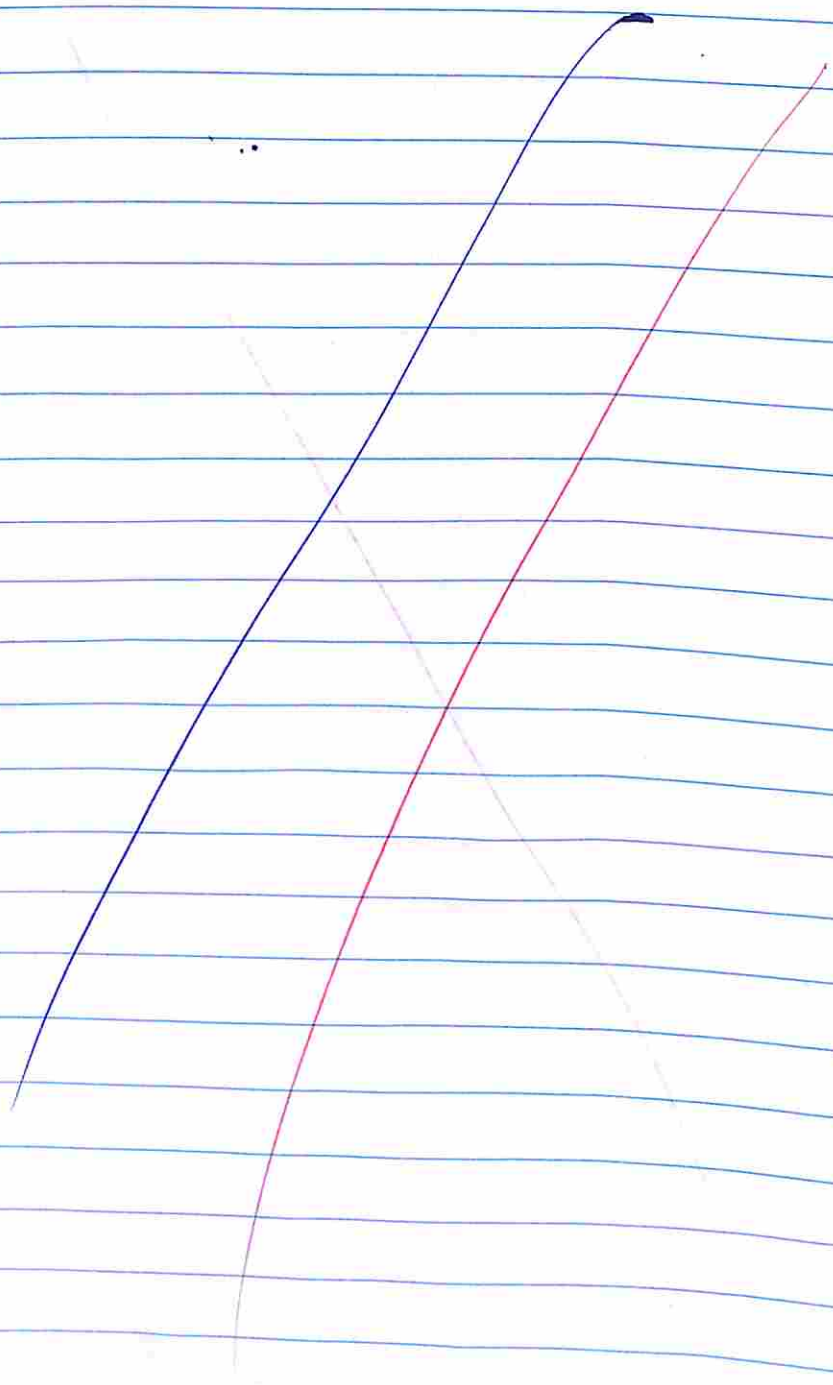

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

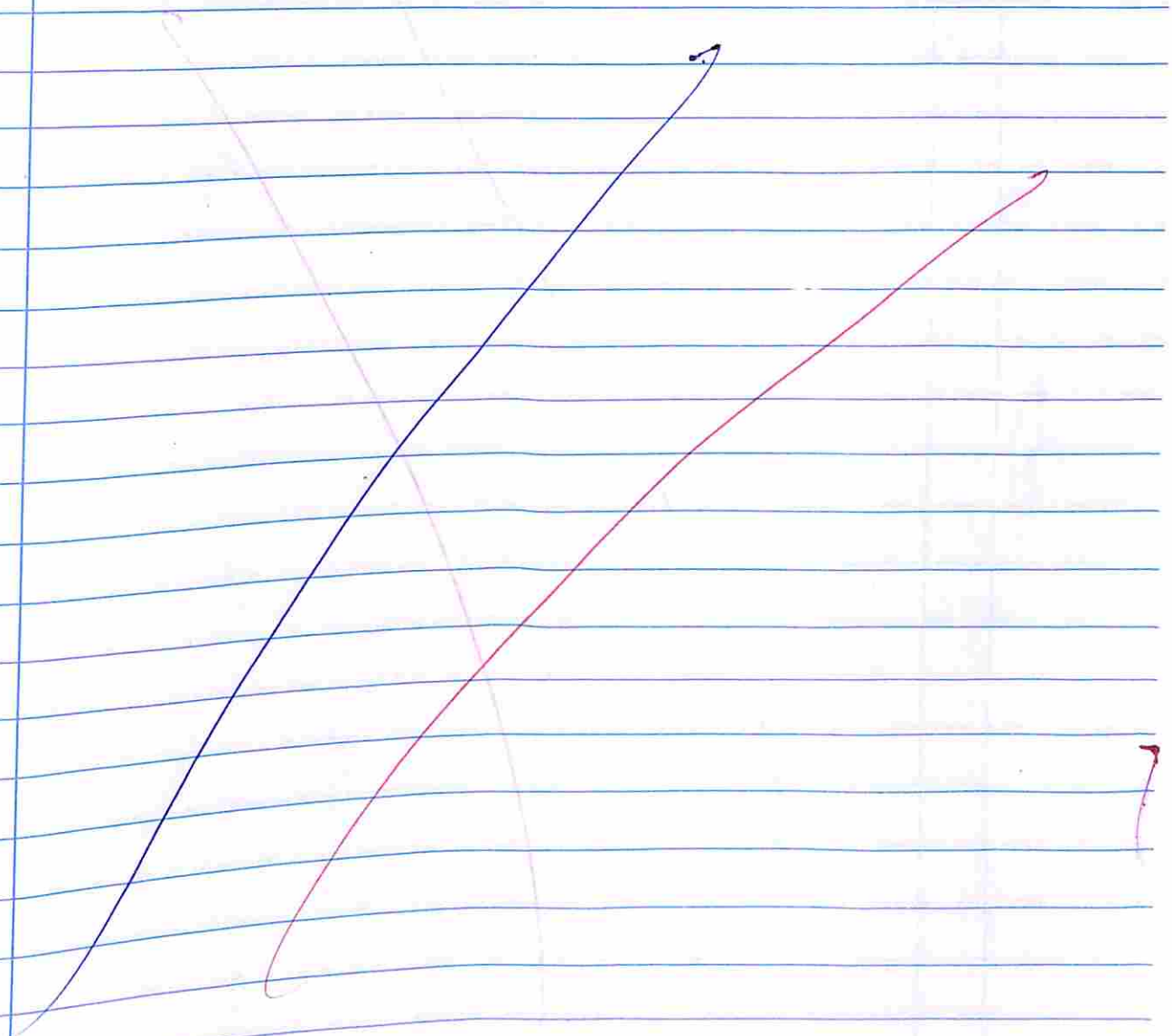

BSER-16/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

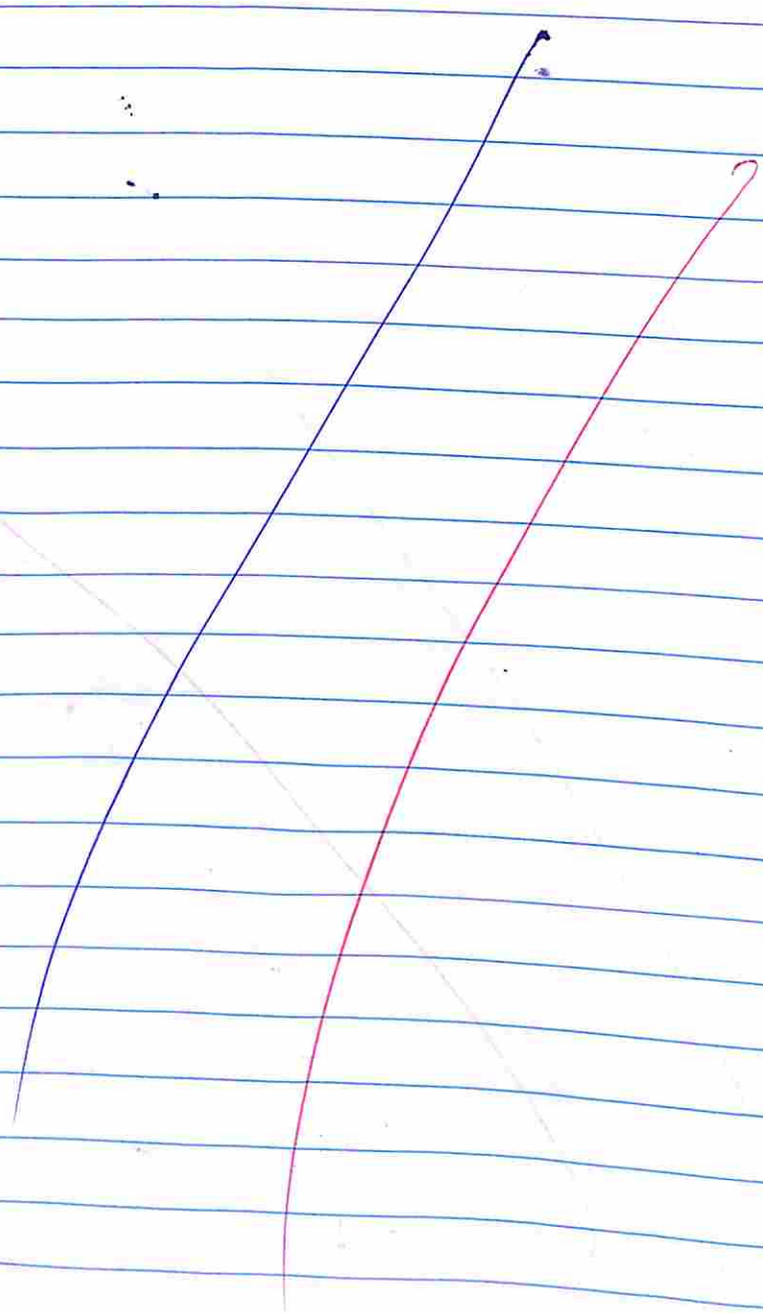

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

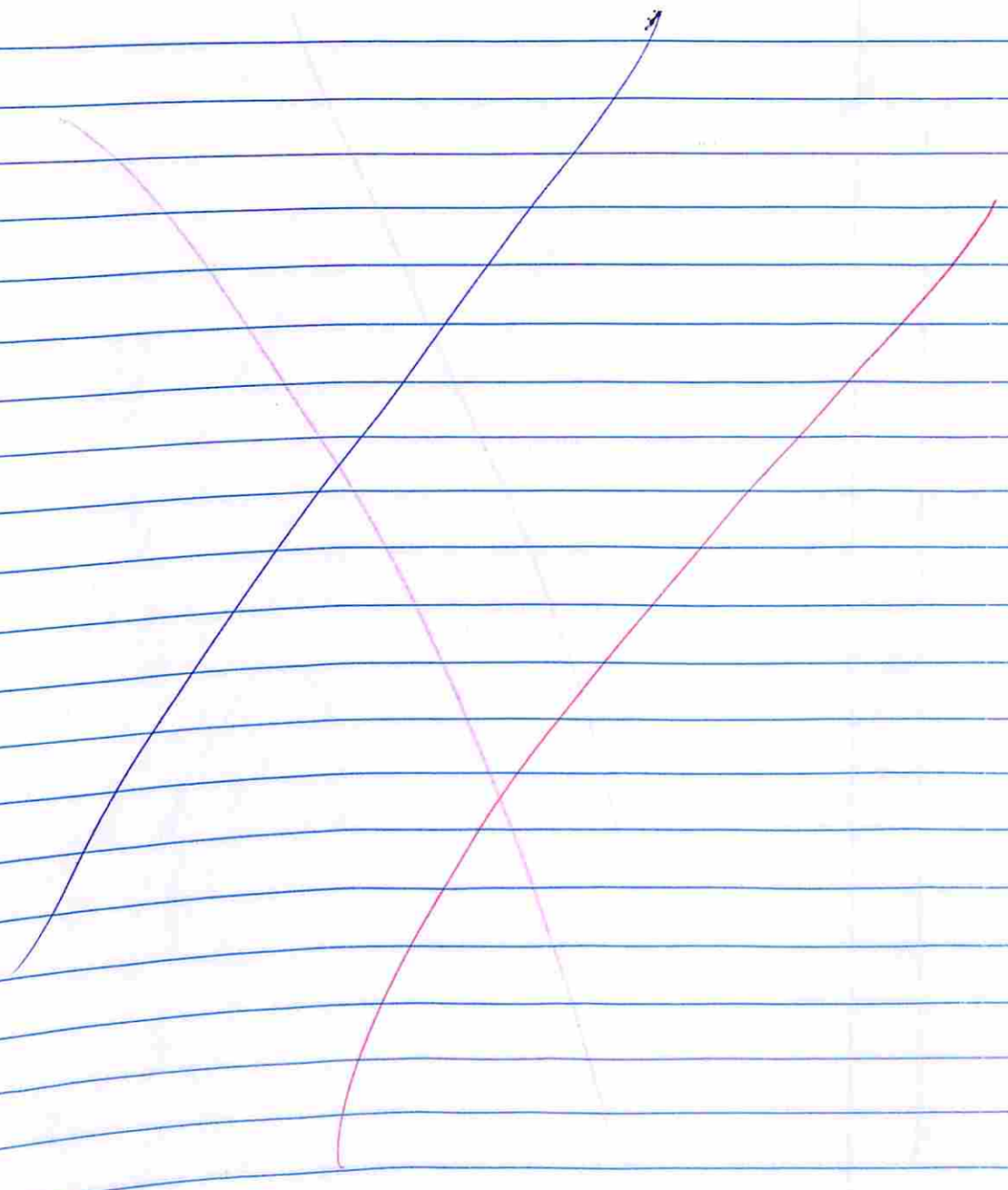

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

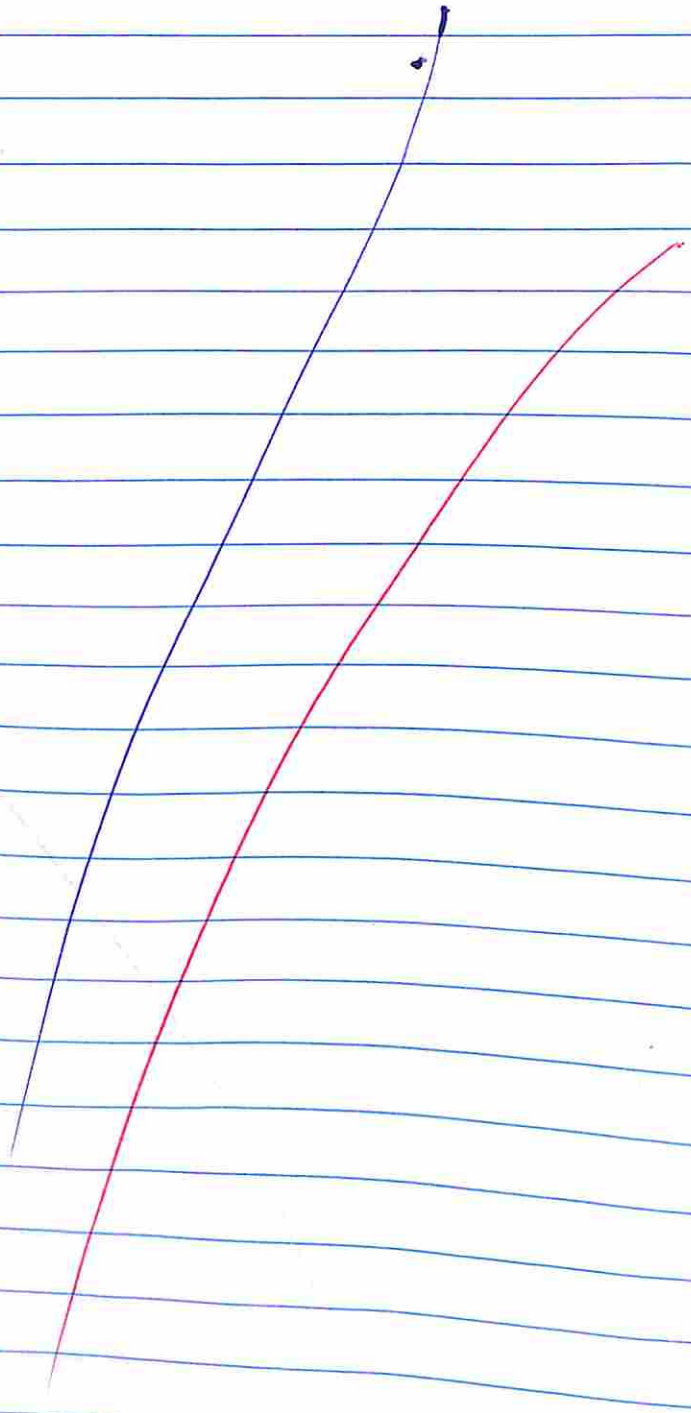

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

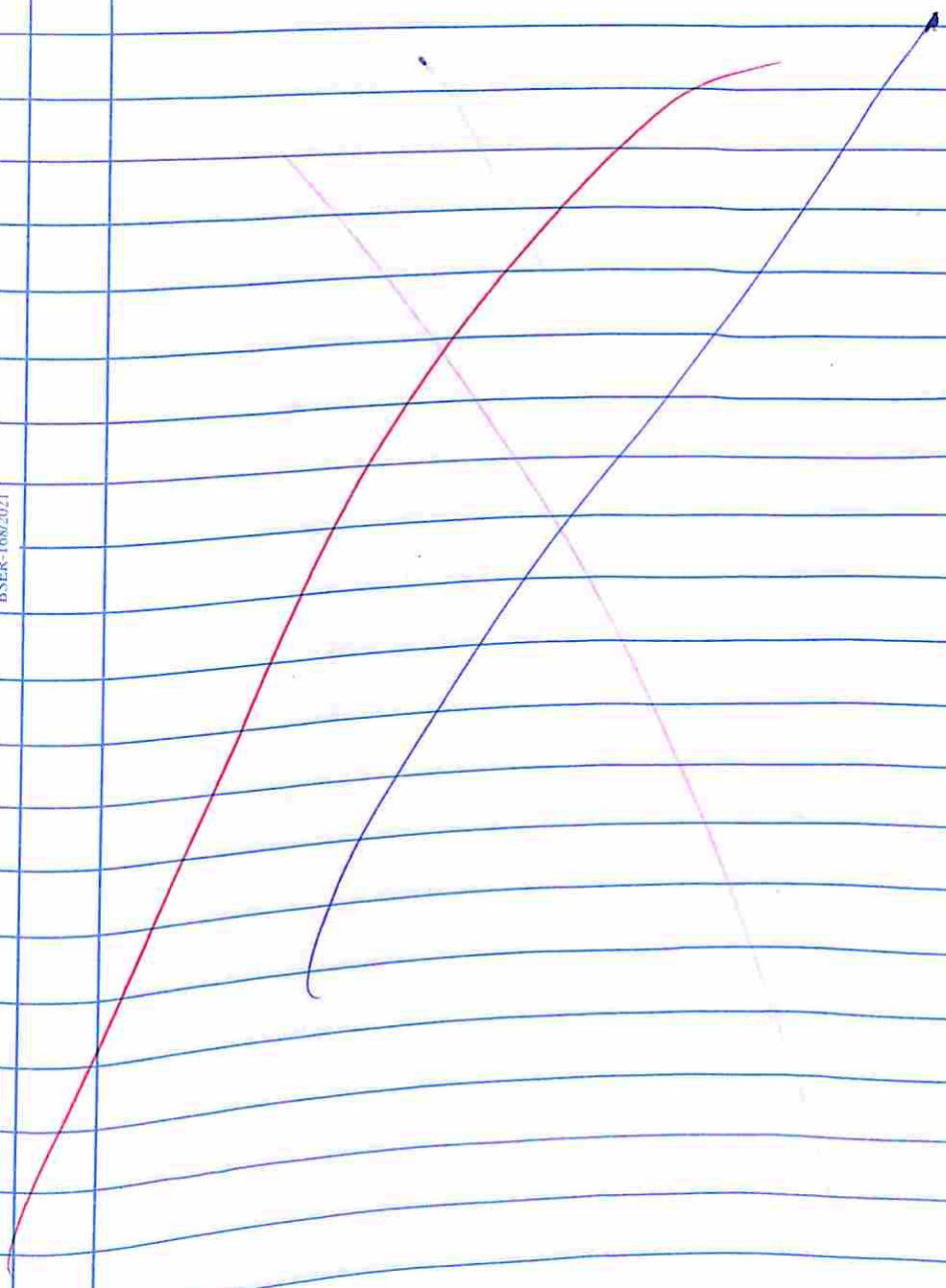

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

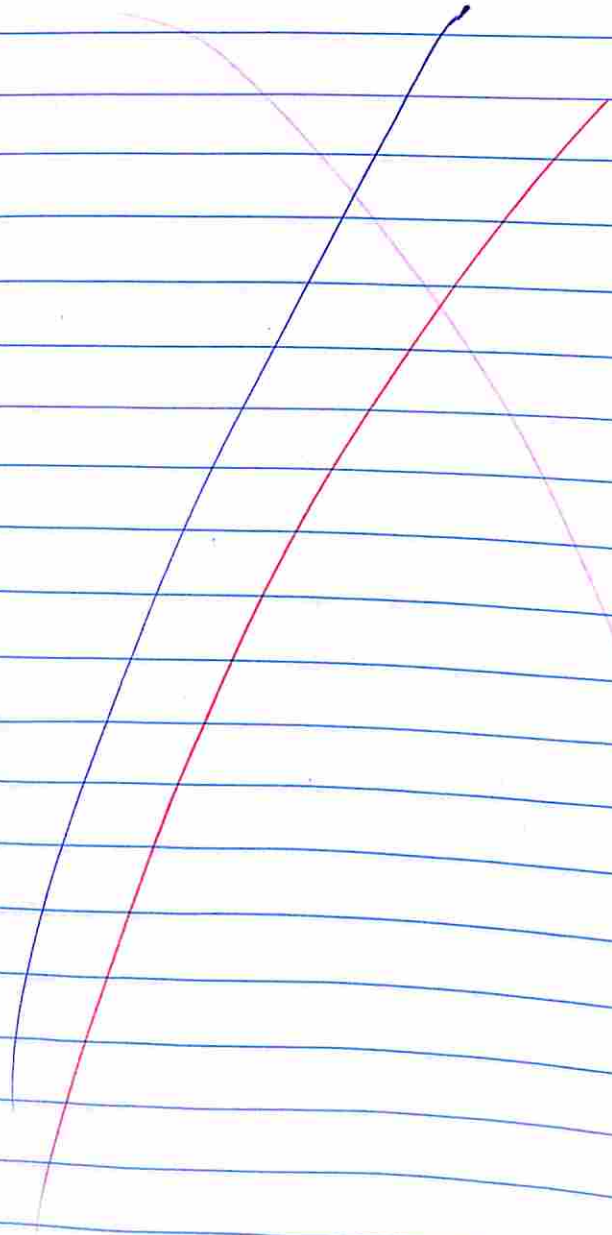

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

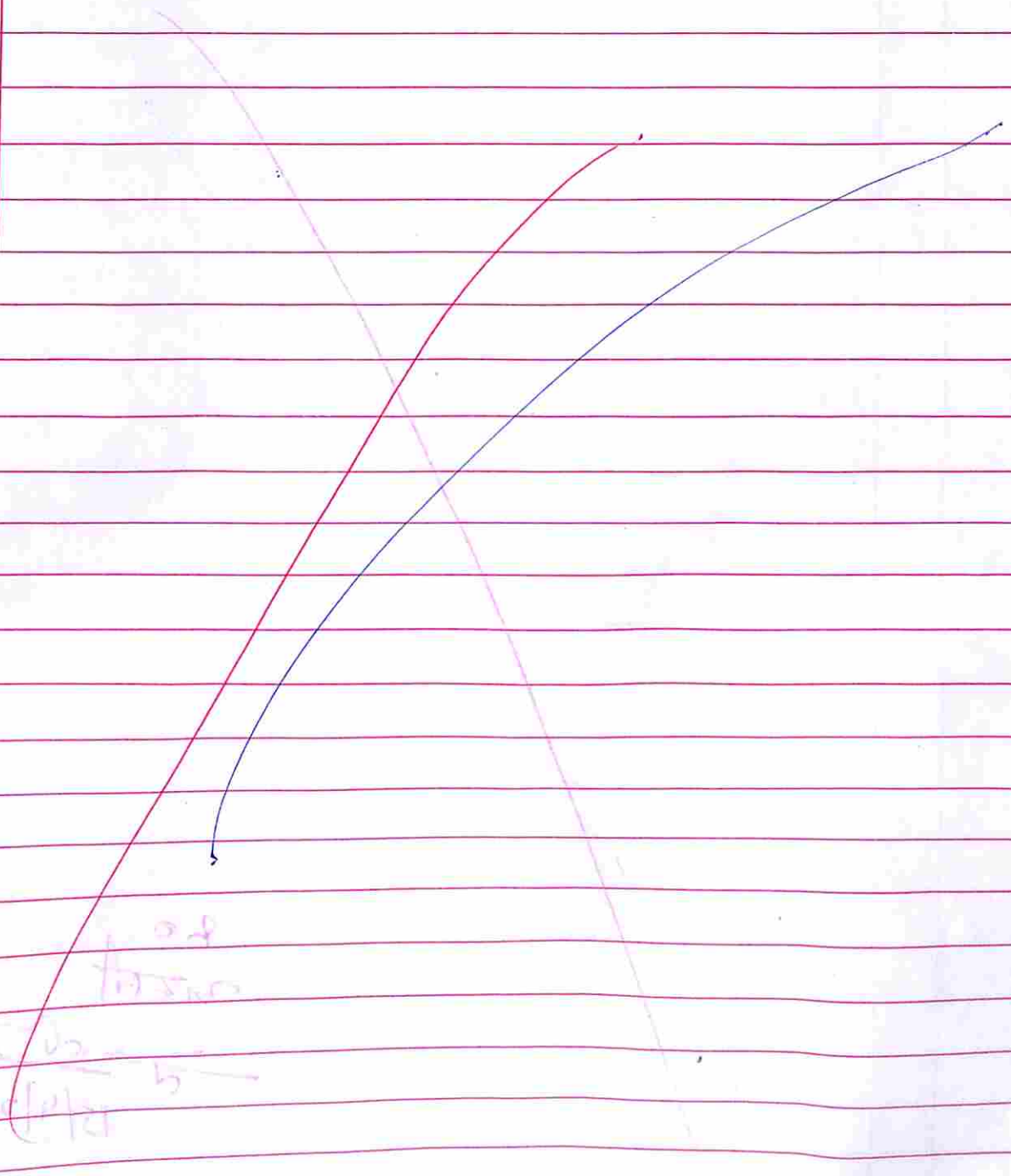

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

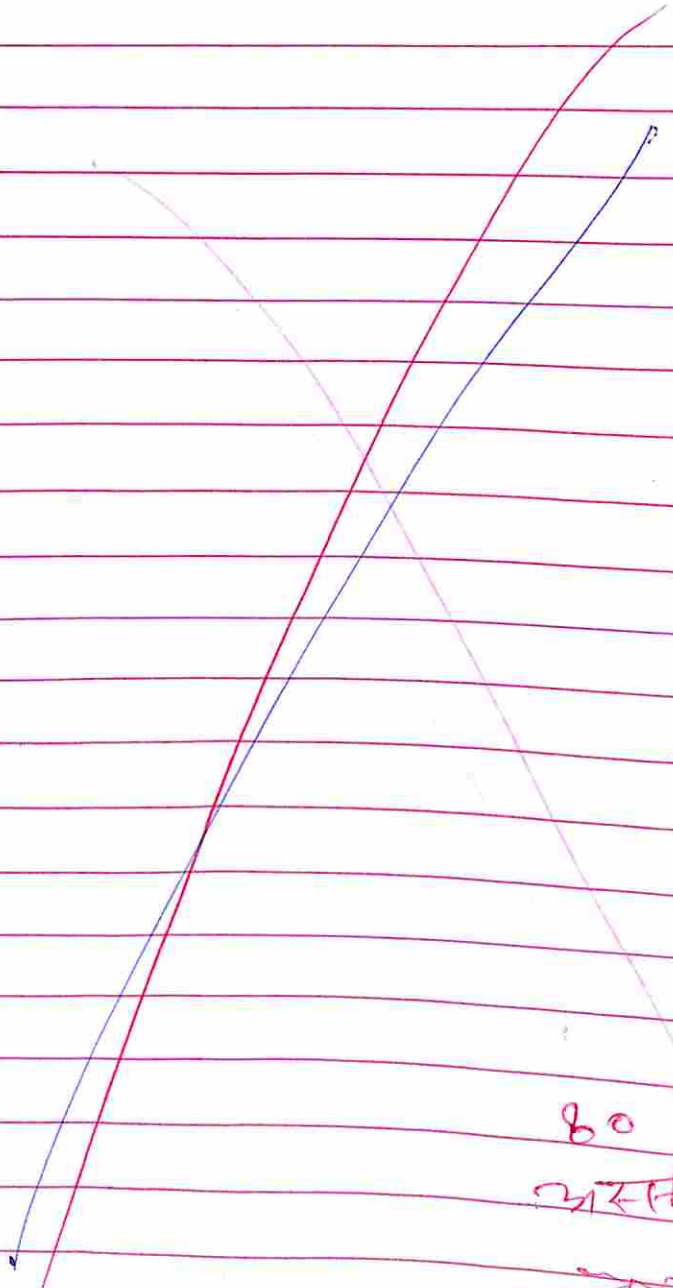

80
आसनी
15/4/2021